भजन

तर्ज–मुझे तेरी मुहब्बत का सहारा

जो आशिक हैं पिया तेरे,नशे में झूमते रहते
न होते दूर इक पल भी,तुझे ही देखते रहते
1–है जिनकी ताम नजर तेरी,
वह रहते मस्त नजारों में
न रहती होश कुछ उनको,डूब जाते बहारों में
नजर वो ही हमें दे दो,न अब कुछ और हैं चाहते
2– हुई गर भूल इक हमसे,
मेहरबां भी धनी तुम हो
हुकम को फिर हुकम दे दो,धनी चरणों में तुम ले लो
जुदायगी न सहन होती,यहीं फरियाद करते हैं
3– है निसवत हम पिया तेरी,
तो फिर क्यूं है ये रूसवाई
है देखा इश्क भी तेरा,और तेरी खुदाई भी
हार मानी पिया हमने,खेल अब तो उठा लेते
4– सितम अब इस जमाने के,
सहे हमसे नहीं जाते
जहां तुम हो वहां हम हैं,जुदा अब हम न रह पाते
लौट चलिए धाम अपने,जहां हम साथ हैं रहते